Dr. Namrta Jain & Dr. Ratnesh Kumar Jain

लेखक के रूप में प्रकाशित प्रमुख संकलन

- मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श
- डी.एल.एड. प्रथम सेमेस्टर एवं चतुर्थ सेमेस्टर (SCERT, उ.प्र.) हेतु हिंदी शिक्षण
- मूल मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएं
- प्रयोजनमूलक भाषा एवं अनुवाद
- Development of Education System in India
- भारतीय शिक्षा प्रणाली का बदलता स्वरूप
- भारतीय समाज एवं मनोविज्ञान
- सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक आंदोलनों का समाजशास्त्र
- भारतीय ज्ञान परम्परा: विज्ञान, दर्शन, संस्कृति और स्वास्थ्य की विरासत
- टीजीटी एवं पीजीटी (हिंदी व संस्कृत) विषयों पर प्रतियोगी पुस्तकों का लेखन
- डी.एल.एड. प्रथम, तृतीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर (SCERT, उ.प्र.) हेतु विज्ञान शिक्षण
- Microbiology & Plant Pathology
- Core Science
- महाविद्यालयीन स्तर पर शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्धन में प्राचार्यों की भूमिका
- राष्ट्र निर्माण का युवा मंच: राष्ट्रीय सेवा योजना
- भारतीय ज्ञान परम्परा विज्ञान, दर्शन, संस्कृति और स्वास्थ्य की विरास

संपादक के रूप में प्रकाशित प्रमुख संकलन

- वैश्विक विचारधाराओं का मूल : भारतीय ज्ञान परंपराएँ
- वैश्विक चिंतन एवं भारतीय ज्ञान परंपराएँ
- भारतीय ज्ञान परंपराओं का वैश्विक दृष्टिकोण
- यथार्थ के धरातल पर मानवीय विचारों की दिशाएँ
- New Education Policy-2020: Different Dimensions of Education
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा के विभिन्न आयाम
- भारतीय लोकतंत्र का चतुर्थ स्तंभ : मीडिया (भाग-1)
- भारतीय लोकतंत्र का चतुर्थ स्तंभ : मीडिया (भाग-2)
- समकालीन साहित्य और स्त्री विमर्श
- पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य की सामाजिक क्रांति और नारी जागरण
- स्वामी विवेकानंद की सामाजिक क्रांति
- प्रेमचंद के साहित्य में प्रतिरोध के स्वर
- भारत की गतिशील प्रवृत्ति के आधार स्तंभ : महान शिक्षाशास्त्री, दार्शनिक, साहित्यकार एवं महापुरुष
- भारतीय परिवेश में किन्नर जीवन की भूमिका
- भारत के महान शिक्षाशास्त्री, दार्शनिक, साहित्यकार एवं महापुरुषों का पथ-प्रदर्शन
- भारतीय समाज के विविध आयाम
- भारत के महान शिक्षाशास्त्री, दार्शनिक, साहित्यकार एवं महापुरुषों का पथ-प्रदर्शन : एक संगोष्ठी
- शिक्षा, शिक्षक एवं शिक्षार्थी : त्रिध्रुवीय प्रक्रिया का बृहद् अवलोकन
- महान शिक्षाशास्त्रियों, साहित्यकारों, महापुरुषों एवं दार्शनिकों का भारत के विकास में महत्वपूर्ण अवदान
- भारतीय साहित्य, सिनेमा और संस्कृति के विविध आयाम
- भारत के महान शिक्षाशास्त्रियों, दार्शनिकों, साहित्यकारों एवं महापुरुषों का योगदान
- आत्मनिर्भर भारत के विविध आयाम : आवश्यकताएँ, चुनौतियाँ एवं समाधान (भाग-1)
- आत्मनिर्भर भारत के विविध आयाम : आवश्यकताएँ, चुनौतियाँ एवं समाधान (भाग-2)
- भारतीय शोध प्रकाशन के परिदृश्य और शोध प्रविधि
- नव भारत की दिशा : शिक्षा, तकनीक, स्वास्थ्य एवं समाज
- नव भारत का पथ : शिक्षा, तकनीक, स्वास्थ्य और समाज
- The Direction of New India: Education,Technology, Health and Society
- विकसित भारत 2047: बहुविषयी दृष्टिकोण से राष्ट्र निर्माण
- आत्मनिर्भर भारत से विकसित भारत तक ज्ञान, नवाचार, और परंपरा का संग
- India 2047: An Era of Inclusive Development, Cultural Consciousness, and Innovation
- आत्मनिर्भर एवं विकसित भारत: बहुआयामी परिवर्तन और सतत विकास की दिशा
- आत्मनिर्भर एवं विकसित भारत: बहुविषयी परिवर्तन एवं सतत प्रगति का प्रतिमान
- Atmanirbhar and Viksit Bharat: An Integrated Framework for Innovation and Sustainable Growth
- वोकल फॉर लोकल आत्मनिर्भर भारत की दिशा में महत्वपूर्ण कदम

Sanmati Spectrum of Knowledge & Emerging Discourse
Office Address- B-002 'Sanmati' Faculty Block
TMU Campus, Delhi Road Moradabad
Mob- +91 9870713912 /+91 8979782949.
E-Mail- sanmatijournal@gmail.com
Website - sanmatijournal.in

ISSN 3108-1819 Year 1 Volume 2 Issue 2 April - June 2026

Sanmati

Spectrum of Knowledge & Emerging Discourse

(A National Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Journal)

(कला, मानविकी, सामाजिक विज्ञान, जनसंचार, विज्ञान)

Managing Editor
Dr. Ratnesh Kumar Jain

Editor-in-chief
Dr. Namrta Jain

Sanmati Spectrum of Knowledge & Emerging Discourse

ISSN 3108-1819 Year 1 Volume 2 Issue 2 April - June 2026

Sanmati
Spectrum of Knowledge & Emerging Discourse

(A National Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Journal)

(कला, मानविकी, सामाजिक विज्ञान, जनसंचार, विज्ञान)

Editor-in–chief
Dr. Namrta Jain
Sanmati Spectrum of Knowledge & Emerging Discourse
President
Sanmati Education & Research Foundation of India
Mob –+91 9870713912 & +91 8979782949.
sanmatijournal@gmail.com

Managing Editor
Dr. Ratnesh Kumar Jain
Sanmati Spectrum of Knowledge & Emerging Discourse
Secretary
Sanmati Education & Research Foundation of India
Mob – +91 7999525735
Jainratnesh79@gmail.com

Sanmati Spectrum of Knowledge & Emerging Discourse

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी
"समकालीन समाज में शिक्षा, ज्ञान, विज्ञान, संस्कृति और मीडिया के बदलते आयाम: एक बहुविषयी दृष्टिकोण"

Editor-in–chief
Dr. Namrta Jain

Office Address-
B-002 "Sanmati", Delhi Road Moradabad (U.P)
&
200/1 "Sanmati" in front of Rajmahal Tikamgarh (M.P)
Mob- +91 9870713912 /+91 8979782949.
E-Mail- sanmatijournal@gmail.com

Publications

JTS Publications
V-508 Gali No. 17, Vijay Park, Delhi-110053
Mobile: 08527460252, 9990236819
Email: jtspublications@gmail.com

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक या जर्नल के किसी भी अंश का प्रकाशन, पुनर्प्रकाशन, फोटोकॉपी, स्कैनिंग, डिजिटलीकरण अथवा किसी भी इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में उपयोग बिना लेखक, संपादक या प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के करना पूर्णतः निषिद्ध है। इस प्रकाशन में शामिल शोध-पत्रों एवं लेखों में व्यक्त विचार, निष्कर्ष और संदर्भ संबंधित लेखकों के व्यक्तिगत मत हैं। इन विचारों के लिए संपादक, प्रकाशक या संपादकीय समिति किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं होंगे। Sanmati Spectrum of Knowledge and Emerging Discourses (A National Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Journal) की संपादकीय समिति केवल प्रकाशित सामग्री के शैक्षणिक मानकों के लिए उत्तरदायी है, लेखकों के विचारों के लिए नहीं। सभी प्रकार के विवादों का निपटारा केवल दिल्ली (भारत) के न्यायालयों के अधिकार क्षेत्र में किया जाएगा।

इस जर्नल में प्रकाशित सभी शोध-पत्र एवं लेख केवल ई-मेल के माध्यम से प्राप्त किए जाते हैं

Index

S. No.	Title of the Paper	Author	Page Nos.
1	Emerging trends in multidisciplinary education & knowledge production	Dr. Vaishali R. Vichare	1
2	Interrelationship of Education, Knowledge, and Information Technology in the Digital Age	Dr. Vandana Kumari,	13
3	Role of Herbal Extracts in Diabetes Management: A Study on Syzygium cumini (Jamun) in Experimental Mice	Renuka Kumari	23
4	Impact of Cinema on Cultural Consumption Patterns in India: A Primary Research Investigation	Dr. Sapna	38
5	Role of social media in Promoting Women Empowerment	Priyadarshani Sony	54
6	Changing Educational Culture and the Right to Education in the Digital Era	Prema Bharti Prof. Ratan Kumar Bhardwaj	64
7	Changing Dimensions of Contemporary Education Systems and the Relevance of Arham Dhyan Yog: A Multidisciplinary Perspective	Priyanshi Jain, Dr. Raka Jain,	71
8	Philosophy, Morality and Contemporary Challenges: An Analytical Study	Dr. Rishika Verma	78
9	सोशल मीडिया बनाम नैतिकता	डॉ. सुनील पाटिल	84
10	दर्शन, नैतिकता और अस्मिता का विमर्श : 'महुआचरित' उपन्यास के आलोक में समकालीन सामाजिक चुनौतियों का अध्ययन	रंजीता शर्मा,	88
11	लोक संस्कृति, लोक साहित्य और समकालीन **समाज** के अंतर्संबंधों का अध्ययन (रामदरश मिश्र और रघुवीर चौधरी के आंचलिक उपन्यासों के संदर्भ में)	विगोरा भाणजी धनजी डॉ. फिरोज़ बेग एस. मिर्ज़ा	95
12	भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा प्रणाली में अंत: क्रिया : एक व्यापक शोध प्रतिवेदन	भट्ट शितल राजेन्द्रकुमार प्रा. डॉ. गीताबहन बी. भूत.	99
13	बहुविषयी शिक्षा पध्दति और ज्ञान पंरपरा के नए आयाम	रिया प्रविन पाहुजा डॉ. आभा संजीव सिंह	107
14	वैदिक कालीन शिक्षा पद्धति की वर्तमान उपादेयता	अंशुल	115
15	इतिहास, संस्कृति और राष्ट्रीय अस्मिता के निर्माण की प्रक्रिया का ऐतिहासिक अध्ययन	डॉ सत्य प्रकाश	120
16	डिजिटल युग में शिक्षा, ज्ञान और सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी में साक्षरता	कुमारी बसुन्धरा	125

17	शिक्षित महिलाओं की बदलती सामाजिक भूमिका	डॉ संगीता वेदप्रताप सिंह ठाकुर	132
18	महिला सशक्तीकरण एवं लैगिक समानता के विविध आयाम	डॉ. नरेश कुमार नेमा	141
19	समकालीन समाज में नगर निगमों की भूमिका : सामाजिक न्याय, समावेशी विकास एवं डिजीटल गवर्नेंश के बदलते आयाम	श्रीमती जया गोखले डॉ. सपना ताम्रकार डॉ. डी. डी. पृष्टि	145
20	डिजिटल और मिश्रित शिक्षा: 21वीं सदी की शैक्षिक क्रांति	डॉ. रेखा. जी	154
21	भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा प्रणाली के बीच अंतःक्रिया	डॉ. वर्षा किरण	162
22	विज्ञान, तकनीक और मानव जीवन की गुणवत्ता में सुधार	अनुपमा नेमीसागर अंबुडकर	167
23	कला, साहित्य और संस्कृति के माध्यम से सामाजिक मूल्यों का पुनर्निर्माण	नीलकमल कुमार	174
24	समकालीन समाज में शिक्षा, ज्ञान, विज्ञान, संस्कृति और मीडिया के बदलते आयाम: एक बहुविषयी दृष्टिकोण	डॉ. बीना	178
25	किशोर विद्यार्थियों की अध्ययन दक्षता पर सोशल मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव का गुणात्मक अध्ययन	हेमलता पटेल	184
26	डिजिटल युग में शिक्षा, ज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी का अंतर्संबंध	डॉ. माधुरी सिंह	196
27	नई शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परंपरा एवं आधुनिक शिक्षा प्रणाली : समन्वय, दृष्टिकोण, सांस्कृतिक मूल्य और नवाचार का अध्ययन	श्रीमती ज्योत्स्ना झारिया	200
28	हिंदी साहित्य में समकालीन समाज में शिक्षा की स्थिति	डॉ. धर्मशिला कुमारी	210
29	सामाजिक न्याय, समानता और समावेशी विकास के समकालीन विमर्श	डॉ सरिता नेमा	220
30	भारतीय ज्ञान परंपरा में जैन साहित्य का योगदान : एक समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ. शैलेंद्र सिंह	225
31	A Study of Vocational Education in the Context of Samagra Shiksha Scheme	Pamela Ghosh Dutta Dr. Brajesh Kumar Sharma Dr. Sanjoy Bhuyan	235
32	Role And Significance of Microfinance in India	Anchal Vashistha Dr. Rajiv Kumar Agarwal	242
33	"Changing Dimensions of Media in Contemporary Society"	Dr. Sona Dhangar Dr. Ram Prakash	251
34	Rural Development, Local Economy and Concept of India Self-Reliance	Dr. Vinay Kumar Baitha	260

35	Management and Sustainable Development: A Jainism Perspective	Dr. Vipin Jain	269
36	The Changing Environment of the Bhil Tribe in the Context of Tribal Literature and Culture	Dr. Sarita Devi	289
37	डिजिटल युग में हिन्दी भाषा-साहित्य का रूपांतरण : एक अध्ययन	मनोज कुमार पटेल	295
38	"डिजिटल युग में शिक्षक की भूमिका : Educational Technology के संदर्भ में एक अध्ययन"	डॉ. समीना कुरैशी	303
39	जैनेंद्र की कहानियों में अभिव्यंजित आस्तिकता : समकालीन सामाजिक एवं दार्शनिक परिप्रेक्ष्य	मुक्ति प्रभात जैन	308
40	लैंगिक समानता, महिला सशक्तिकरण एवं सामाजिक विकास में महिलाओं की भूमिका: चुनौतियाँ, अवसर और समाधान	अनुराधा	314
41	समकालीन समाज में शिक्षा, ज्ञान, विज्ञान, संस्कृति और मीडिया के बदलते आयामः एक बहुविषयी दृष्टिकोण	डॉ. सागर देसले	322
42	समकालीन समाज में मीडिया की प्रमुख समस्याएँ और उनके सम्भावित समाधान- जैन दर्शन के सम्बन्ध-सिद्धान्तों के आलोक में	ऋतु जैन एमेरिटस प्रो. राका जैन	327
43	भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा पद्धति के बीच अंतर्संबंध	डॉ. अशोक कुमार	335
44	भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा प्रणाली के बीच अंतः क्रिया	डॉ मनोरमा जैन	343
45	गंगा को अविरल एवं निर्मल बनाने में युवाओं की भूमिका : चुनौतियाँ, संभावनाएँ एवं समाधान — एक समीक्षात्मक अध्ययन"	डॉ मोहित कुमार डॉ० विजय शर्मा डॉ सुशील भदूला	351
46	डिजिटल मीडिया और वेब सीरीज़ में भाषा, लोक संस्कृति एवं सामाजिक पहचान का अंतरसंबंध	सचिन कुमार डॉ. एस. पद्मप्रिया	358
47	समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में शिक्षा प्रणाली के बदलते आयाम और चुनौतियाँ	डॉ. जी. उमानरसिम्हा मूर्ति	364
48	भारतीय लोकगीत: सस्कृति, समाज, नारी चेतना एवं लोकजीवन का समग्र अध्ययन	श्रीमती कुसुम प्रजापति प्रो. अरुण शुक्ला	368
49	समकालीन समाज में शिक्षा का महत्त्व	डॉ. निवेदिता कुमारी	378
50	लोक साहित्य में उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति	डॉ. दीपिका आत्रेय	381
51	समकालिन हिंदी एवं मराठी उपन्यासो में साम्प्रदायिकता	नदाफ अजरुद्दीन सलिम प्रो. हाशमबेग मिर्झा	384

52	समकालीन समाज में मीडिया का संस्कृति, जीवनशैली, सामाजिक मूल्यों एवं युवा चेतना पर प्रभाव : एक समग्र अध्ययन	डॉ अल्पना शर्मा	391
53	भारतीय ज्ञान परंपरा का गिजुभाई बधेका के शैक्षिक विचारों पर प्रभाव	विजय सिंह माली	398
54	उच्च शिक्षा के विकास में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. गोरधन जाटव	402
55	महात्मा गांधी एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक न्याय और समावेशी विकास संबंधी विचारों का तुलनात्मक विश्लेषण	डॉ सोनी कुमारी	409
56	डिजिटल मीडिया, सोशल मीडिया और जनमत निर्माण की प्रक्रिया	श्रीमति रश्मि अनिल जैन	417
57	मानव जीवन पर प्रौद्योगिकी का प्रभाव	डॉ. संगीता कुम्भारें	422
58	कल्याणकारी राज्य की स्थापना में जैन साहित्य का योगदान : एक अध्ययन	डॉ. ज्योति गौतम	429
59	दर्शन नैतिकता और समकालीन सामाजिक चुनौतियाँ : भारतीय संदर्भ में	डॉ. प्रीति प्रज्ञा	436
60	वैज्ञानिक तकनीकों से मानव विकास में योगदान एवं भविष्य आधारित दृष्टिकोण	महेन्द्र सिंह राणा	441
61	A Study of Cognitive Styles Among Secondary School Students and Their Stress Management	Dr. Riyanka Singh Sandhya Yadav	447
62	Reconstruction of Social Values through Art, Literature and Cultural discourses	Sajal Jharia Prof. (Dr.) Vineeta K. Saluja	453

59

दर्शन नैतिकता और समकालीन सामाजिक चुनौतियाँ : भारतीय संदर्भ में

डॉ. प्रीति प्रज्ञा
सहायक प्राध्यापिका
हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान कटक, ओड़िशा

सारांशिका :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज मनुष्य निर्मित ऐसी व्यवस्था है जिसमें मनुष्यता को बरकरार रखना अनिवार्य शर्त है। जिस व्यक्ति या समाज में इस शर्त की पूर्ति नहीं हो पाती वह व्यक्ति या समाज असामाजिक ही माना जाएगा। प्रत्येक समाज अपने देश काल परिस्थिति के अनुरूप अपनी मानव-जाति के लिए महान मूल्यों की आदर्श स्थापना हेतु तथा उनके आचरण में करणीय और अकरणीय का भेद बोध भरने हेतु कुछ नैतिक अवधारणाएं निर्मित करता है। ये नैतिक अवधारणाएं उस समाज या जाति की समुन्नत बौद्धिक-सैद्धांतिक धरोहरों पर आधारित होती हैं जिन्हें दर्शन या शास्त्र कह सकते हैं। अतः नैतिकता जीवन निर्वाह का एक महत्त्वपूर्ण अवयव है। अगर भारतीय संदर्भ में देखें तो यह निर्विवादित है कि समस्त भारतीय दर्शन तथा उसकी दार्शनिक सरणियाँ और उनसे प्रस्फुटित नैतिकता का आधार वेद और वैदिक धर्म है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष- ये चार पुरुषार्थ माने गये हैं। परंपरागत भारतीय जीवन की प्रत्येक गतिविधियों में धर्म का विचार सर्वप्रथम किया जाता रहा है जिस कारण यहाँ युद्ध भी धार्मिक नैतिकता से संवलित है और शक्तिशाली के लिए क्षमा और परोपकार सबसे बड़ा धर्म है-

"परहित सरिस धरम नहीं भाई ,
पर पीड़ा सम नहि अधमाई" ।

'मोक्ष' मनुष्य जीवन की चरम उपलब्धि है। ऐसे में भारत में अनैतिक आचरण की गुंजाइश कम ही बचती है क्योंकि यहाँ अनैतिकता को पाप समझा जाता रहा है। भारतीय जीवन आदर्श और नैतिकता का ज्वलंत उदाहरण रहा है जिसे यहाँ के पौराणिक कथानकों तथा 'रामायण' और 'महाभारत' के चरित्र 'राम' 'सीता' 'लक्ष्मण' 'कृष्ण' 'पांडव' 'कुंती' 'कर्ण' आदि के माध्यम से भली-भाँति समझा जा सकता है। अगर इससे किसी को आपत्ति हो तो वे 'गोदान' के होरी का 'मरजाद-निर्वाह' और 'उसने कहा था' के लहना सिंह का 'वचन-पालन' या सुदर्शन की कहानी 'हार की जीत' के डाकू खड़गसिंह का 'हृदय-परिवर्त्तन ही देख लें।

बीज शब्द : व्यवस्था, आदर्श, मूल्य, नैतिक, अवधारणा, सैद्धांतिक, अवयव, धर्म, मोक्ष, विचार, वैदिक, दर्शन आदि ।

विषय – प्रवेश :

भारतीय दर्शन मुख्यत: जीवन के चरम लक्ष्य 'मोक्ष' और 'ईश्वर की खोज' पर केंद्रित है और यह 'आस्तिक' तथा 'नास्तिक' रूपी दो धाराओं में विभक्त है। वेद प्रमाणित 'आस्तिक दर्शन' के छह भेद हैं जिसे 'षड दर्शन' भी कहा जाता है। ये क्रमश: 'न्याय', 'वैशेषिक', 'सांख्य', 'योग', 'मीमांसा' और 'वेदान्त' के नाम से विख्यात हैं। वहीं 'नास्तिक दर्शन' अवैदिक दर्शन है जिसमें 'चार्वाक दर्शन' तथा महात्मा बुद्ध प्रणीत 'बौद्ध दर्शन' और महावीर प्रणीत 'जैन दर्शन' आते हैं। जहाँ 'आस्तिक दर्शन' धर्म और कर्म दोनों सिद्धांतों को मानते है वहीं 'नास्तिक दर्शन' केवल कर्म के सिद्धांत को

मानते हैं। इसमें चार्वाक दर्शन एक 'भोगवादी दर्शन' है जिसे भारतीय समाज में प्रश्रय नहीं मिला, जिस कारण इसकी परंपरा नहीं बन पाई। बाकी के सभी दर्शनों को देश-विदेश में पर्याप्त प्रसिद्धि मिली और उसकी परंपरा आज भी वर्त्तमान है।

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया: सर्वे भद्राणि पश्यन्तु" जैसी मंगल-कामनाओं से आप्लावित मानस रखने वाले और "वसुधैवकुटुम्बकं" जैसे सूत्र-वाक्य को अपने जीवन का ध्येय मानने वाले भारतीय समाज को आज सामाजिक स्तर पर कई प्रकार की विसंगतियों और विद्रूपतामूलक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इसके परिपार्श्व के कारणों की पड़ताल करना ही इस आलेख का उद्देश्य है। इस पड़ताल में भारतीय इतिहास, संस्कृति, साहित्य, कला और राजनीति से आवश्यक संदर्भ लेते हुए मैं अपनी बात की पुष्टि करूंगी।

प्राचीन विश्व का शायद ही कोई ऐसा भू-भाग रहा हो जो अपनी सूक्ष्म अंत:प्रज्ञा और प्रांजल ज्ञानराशि से इतना प्रदीप्त हो कि वहाँ के जनजीवन में स्वर्ण की दीप्ति भी मलिन और उसका मोह अनावश्यक तथा महत्वहीन माना जाता रहा हो जितना समग्र प्राचीन भारतीय भू-भाग पर रहा। मध्यकालीन आक्रांता महमूद गजनवी के साथ भारत आया प्रसिद्ध अरबी इतिहासकार 'अल-बिरूनी' ने अरबी भाषा में लिखी अपनी किताब 'किताब-उल-हिन्द' या 'तहकीक-ए-हिन्द' में भारतीयों की विशेषकर जिन तीन विशेषताओं का जिक्र किया है, वे क्रमशः इस प्रकार हैं – 'भारतीय मृत्यु का भय नहीं मानतें', 'भारतीयों को अपने ईश्वर पर अटूट विश्वास है', तथा 'उन्हें अपनी ज्ञान-संपदा और परंपरा पर अभिमान है'। परंतु अल-बरूनी ने या किसी भी प्राचीन विद्वान ने यह नहीं लिखा कि भारतीय धन के लोभ-लालच में आकर किसी अन्य मुल्क पर आक्रमण किए हों। उलट अन्यान्य विदेशी जातियों के आक्रान्ताओं ने भारतीयों की समन्वयात्मक नीति और उनके भौतिक जगत के प्रति विमोह का फायदा उठाते हुए समय-समय पर आ-आकर भारत को लूटा, जघन्य हत्याएं कीं और सांस्कृतिक रूप से क्षति पहुंचाने की भरपूर कुचेष्टाएं कीं। भारत की धरती पर कदम रखने वाली ये भिन्न संस्कृति की जातियाँ हैं- 'ईरानी', 'यूनानी', 'यवन', 'शक', 'पहलव', 'कुषाण', 'हूण', 'अरब', 'तुर्क', 'गजनवी', 'तुगलक', 'खिलजी', 'मंगोल', 'मुगल', 'अफ़गान', 'पूर्तगाल', 'डच', 'फ्रांसीसी' और अंततः 'ब्रिटिश'। इनमें से अधिकतर ने भारतीयों की 'धार्मिक-सांस्कृतिक सहिष्णुता' एवं 'अतिथिदेवभव' की मान्यता का लाभ उठाते हुए कपट या छल-बल से भारत की केन्द्रीय सत्ता की बागडोर भी संभाली और तथाकथित रूप से हम भारतीयों के 'मसीहा' या 'भाग्य-विधाता' बन बैठे। ऐसे में भारतीय अपनी मौलिक जड़ों से दूर तो हुए ही साथ-साथ शैक्षिक-सांस्कृतिक-धार्मिक स्तर पर जो समस्याएं उभरीं आज भारतीयों के सामने वह एक भयावह सामाजिक चुनौती बनी हुई हैं।

भारतीय समाज अपनी सहिष्णुता और धार्मिक सद्भावना के लिए जाना जाता है। यही कारण है कि इतने बाहरी आक्रमणों के बाद भी भारतीय सभ्यता बनी हुई है जिसे 'मुहम्मद इकबाल' के इस शेर से समझा जा सकता है –

" यूनान-ओ-मिस्र-ओ-रोमां सब मिट गए जहाँ से,
अब तक मगर है बाकी नाम-ओ-निशाँ हमारा ।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौर- ए- ज़मां हमारा ।"

इस शेर में जिस 'कुछ बात' की तरफ इशारा है वह आखिर क्या है, जिससे भारतीय सभ्यता और संस्कृति सदैव पुनर्नवा होकर नवजीवन प्राप्त करती रही है? यह हमारे वेद और शास्त्र सम्मत दर्शन की जीवंतता की ही देन है जिसने भारतवासियों में साहस और दृढ़ संकल्प की शक्ति प्रदान किया है । इसी कारण भारतीय नैतिकता का पालन और सदाचारपूर्ण आचरण करते हुए जीवन जीने के लिए प्रतिबद्ध रहें। परंतु, कालांतर में पाश्चात्य और यूरोपीय जीवन-शैली के वशीभूत इधर लगभग पचास वर्षों में जो पीढ़ियाँ बनी उन्होंने अपनी मूल की तरफ ज्यादा ध्यान नहीं दिया। यह नई पीढ़ी पुरातन भारतीय संस्कृति, भारतीय सभ्यता या भारतीयता के नाम से नाक-भौं सिकोड़ती पीढ़ी है और ऐसे में समकालीन भारतीय समाज में जो सांस्कृतिक, राजनैतिक चुनौतियाँ उभरीं हैं उनमें सबसे बड़ी चुनौती भारतीय युवा मन का भटकाव है। दूसरी बाधा धार्मिक-सांस्कृतिक उन्माद और असहिष्णुता को लेकर है जिस कारण समय-समय

पर देश के अंदर ऐसी घटनाएं आए दिन घट ही जाती हैं जिससे मनुष्यता कलंकित होती है । भोले-भाले ग्रामीणों, आदिवासियों को लोभ-लालच का भुलावा देकर धर्मांतरण करवाना, लव-जिहाद का घातक खेल खेलना, आतंकवादी घटनाओं को अंजाम देना, एकता और समानता के नाम पर एक विशेष धार्मिक गतिविधियों को बढ़ावा देना, भारत में क्षुद्र तुष्टीकरण की राजनीति की कमजोरी रहें हैं ।

मैकाले द्वारा प्रायोजित आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा ने हमारी भारतीय आत्मा और उसकी सांस्कृतिक चेतना को एक तरह से धूमिल करने का बीड़ा उठा लिया है। ऐसे में हमें अपनी स्वर्णिम परंपरा की पहचान बनाए रखने के लिए अपनी मूल की तरफ लौट कर वेद-विदित दर्शनों से पुष्ट नैतिकता को जानना होगा और पुन: 'मैं कौन हूँ' जैसे प्रश्नों से टकराना ही होगा। 'राष्ट्र कवि' मैथिलीशरण गुप्त ने कहा भी है –

"हम कौन थे क्या हो गये और क्या होंगे अभी,
आओ विचारें बैठकर ये समस्याएं सभी"।

आज का मिश्रित भारतीय समाज पूर्णतः पूंजीवादी संस्कृति का समाज हो चुका है। ऐसे में वित्त या धन की महत्ता सर्वोपरि है। इससे समाज में धनी गरीब के बीच अंतर का बढ़ा हुआ अनुपात देख कर, गरीबों की बेबसी और उनकी लाचार हालत देख कर किसी को भी तरस आ जाए। भारतीय जन मानस की एक सामान्य समझ है कि बिना अनैतिक कार्य किए धन का संग्रह हो ही नहीं सकता। मतलब जो व्यक्ति अनैतिक है, वही सफल है या सत्य और सदाचार के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति पर्याप्त सफलता नहीं प्राप्त कर पाते। इस कारण भ्रष्टाचार और अनीति समाज में जड़ें जमा चुकीं हैं, परंतु नैतिक व्यक्ति अनैतिकता के इन अंधेरे रास्तों का भविष्य जानता है, वह किसी भी कीमत पर अपने ईमान या आत्मा से समझौता नहीं कर सकता। परंपरागत नीतिकारों से लेकर मध्यकालीन संत कवियों तक ने अपने सूत्रात्मक वाणियों में सदैव नैतिक और सदाचारी बने रहने की बात की है -

"मातृवत परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्ठवत ।
आत्मवत सर्वभूतेषु, य: पश्यति स: पंडित:।"

संत कबीर का भी यह दोहा देखिए –

"सहज मिलै सो दूध सम, माँगि मिलै सो पानि।
कहै कबीर वह रक्त सम, जामें ऐंचातानि ।"

तकनीक प्रधान वर्तमान समाज में शिक्षा केवल रोजगारोन्मुख और धनार्जन का साधन बन कर रह गई है। आज समाज में नैतिक बातें कहना या सुनना पूर्णतः गैरजरूरी या अव्यावहारिक माना जा रहा है। संयुक्त परिवार की अवधारणा कब की छिन्न-भिन्न हो चुकी है। एकल परिवार की संरचना भी ध्वस्त होती जा रही है और युवा पीढ़ी का विश्वास 'लीव-इन' संबंध पर ज्यादा हो चला है। 'विवाह' नामक सामाजिक संस्था आज अत्यधिक चिंतनीय है। मनुष्य की बौद्धिक क्षमता सूचना परक होकर रह गई है, जिससे उसकी मौलिक रचनात्मक शक्ति में दिनों दिन ह्रास होता देखा जा रहा है। ऐसे में समाज के सामने आज एक ऐसी चुनौती आ खड़ी हुई है जिसे हम 'कृत्रिम बुद्धिमता' (Artificial Intelligence) के नाम से जानते हैं। यह अब तक की मनुष्य अर्जित सर्वोत्कृष्ट तकनीकी सफलता है। मानव जगत का आगामी भविष्य अब इसी के हाथों में है।

परिवर्तन शाश्वत नियम है, ब्रह्मांड का सारा कार्य व्यापार इस बात की पुष्टि करता है। समाज भी परिवर्तनशीलता के इस नियम से अछूता नहीं है। हाँ, यह जरूर है कि पिछली पीढ़ी ने समाज एवं परिवेश में इतना बदलाव नहीं देखा होगा, जितना वर्तमान पीढ़ी देख रही है। संचार के साधनों एवं उसके उपकरणों का दिनों दिन नवीकरण एवं अद्यतनता, सूचना का त्वरित वैश्विक प्रसार, सामाजिक संचार माध्यमों की उपलब्धता तथा भूमंडलीकरण ये कुछ ऐसी चीजें हैं जिन्होंने व्यक्ति को इतना सक्षम बना दिया है कि व्यक्ति के समक्ष कोई भी रहस्य या गोपनीयता अब नहीं रही। ज्ञान तार्किक और बौद्धिक होकर अत्यधिक सूचनापरक हो गया है। नैतिक होने का मतलब मात्र संवैधानिक होना मान लिया गया है जो तार्किकता पर तो सही है, पर मनुष्य में पारंपरिक नैतिक चेतना का सर्वथा अभाव है। किसी भी देश

का संविधान अपने नागरिकों को समानता और स्वतंत्रता का अधिकार देता है पर नागरिकों का देश के प्रति जो कर्तव्य है उसके पालन में निश्चित रूप से चूक होती है। चूक को जानते हुए भी नजरंदाज कर लिया जाता है पर अधिकार की मांग के लिए सड़क तक उतर आते हैं। इस प्रकार एक आत्मनिष्ठ समाज किसी महान राष्ट्र का गठन नहीं कर सकता। महानता त्याग, समर्पण और धैर्य के सम्मिश्रण से सुनिश्चित होती है और यह उसी समाज में संभव है जिसकी जड़ें गहरी हों तथा उस समाज की आस्था भी अपनी सभ्यता और संस्कृति की प्राचीनता के प्रति अत्यधिक हो ।

प्राचीन भारतीय समाज अपनी परंपरागत नैतिक शिक्षाओं, जीवनमूल्यों और सार्वभौमिक सद्भाव के लिए जाना जाता है । इन बातों को ध्यान में रखते हुए यदि आज की पीढ़ी अपनी नैतिक धरोहरों को अपने आने वाली पीढ़ियों तक संप्रेषित करती रहे और वेद नीतिशास्त्र के महत्व को तथा उसके गुणात्मक मूल्यों को अगली पीढ़ी तक हस्तांतरित करती रहे तो भारतीय बड़ी से बड़ी चुनौती का सामना कर सकते हैं। क्योंकि वे जीवन मूल्य हमारे वेदों से आगत हैं। चारों वेद सिर्फ कुछ मंत्रों और ऋचाओं का संग्रह ही नहीं है वरन तत्कालीन भारतीय मनिषियों की उन्नत बौद्धिक क्षमता का प्रकर्ष हैं। जो मानव जीवन के प्रत्येक पहलुओं को संस्पर्श करते हैं । 'ऋग्वेद' जहां जीव जगत माया ब्रह्म प्रकृति और पुरुष को परिभाषित व्याख्यायित करता है वहीं यजुर्वेद उपासना के तौर तरीकों एवं उसकी विधियों पर प्रकाश डालता है। सामवेद जीवन में कला सौन्दर्य साहित्य के महत्व को रूपायित करता है तो अथर्ववेद वनस्पति एवं बाहरी जगत आदि के रहस्यों को उद्घाटित करता है। 'रामायण' और 'महाभारत' जैसे दो महाकाव्य मनुष्य के समस्त जीवन का आदर्श दृष्टान्त प्रस्तुत करते हैं । कहा भी गया है कि जो महाभारत में नहीं है, वो भारत में भी नहीं है । यानि जीवन के प्रत्येक पहलुओं पर बड़ी बारीकी से विचारने वाले ये दोनों महाकाव्य अपने पात्रों के माध्यम से जीवन की प्रत्येक समस्याओं का सहज हल प्रदान करते हैं। आज जबकि लगभग पूरा विश्व प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से युद्ध से आक्रांत है। जो देश बाहरी तौर पर युद्ध से अछूता दिख रहा है वह भी आंतरिक गृहयुद्ध से त्रस्त है। शक्तिशाली देश अपने से कमज़ोर या लाभदायक देशों पर हमला कर अपनी शक्ति का खुले आम प्रदर्शन कर रहे हैं। वैश्विक संगठन जो विश्व शांति के लिए प्रतिबद्ध थे , चुप हैं । ऐसी स्थिति में भारत और भारतीय दर्शन ही समस्त विश्व की मानव जाति तक शांति, अहिंसा, करुणा तथा जीव के प्रति दया के भाव का प्रकाश फैला सकता है। नीति और अनुशासन से सम्बद्ध जीवन ही एक आदर्श जीवन होता है । विज्ञान द्वारा अब तक ज्ञात तथ्य और सत्य के आधार पर मनुष्य जाति ने जो बौद्धिक उपलब्धियाँ हासिल की हैं उससे जीवन तो खुशहाल हुआ पर असंतुष्टि और अशांति का भाव कहीं अधिक बढ़ा है । जीवन की उदातता भौतिक संसाधनों की संपन्नता में नहीं बल्कि आत्मिक शांति में है, यह आज प्रमाणित हो चुका है । जब सारा यूरोप अंधकार युग में गोते लगा रहा था तब भारतीय ऋग्वेद की ऋचाओं का गायन कर "कस्मै देवाय हविषा विधेम" की प्रार्थना कर रहे थे । भारतीय विवेक ने ब्रह्मांड की रहस्यात्मकता का उद्घाटन करते हुए आत्मिक चेतना के आंतरिक स्तरों को भी परत दर परत उद्घाटित किया है ।

अंतत: इस चुनौती की तरफ भी एक नजर डाल दी जाए जो मानव जाति और प्रकृति के बीच एक बड़ी खाई पैदा करने वाला तत्व है - 'औद्योगीकरण'। इसने मनुष्य के सुख के साधनों के निर्माण के नाम पर प्रकृति और प्राकृतिक संपदा का भरपूर दोहन किया है, जिससे प्राकृतिक असंतुलन, भू-स्खलन, जल स्तर की न्यूनता एवं बहुविध प्रदूषण से मानव जीवन संकटापन्न स्थिति में आ गया है। स्थायी विकास के नाम पर जल- जंगल-जमीन का दोहन करना, प्राकृतिक घटकों के साथ हस्तक्षेप करना, जिन कारणों से भूमंडलीय तापमान का आधिक्य और ध्रुवीय ग्लेसियर के पिघलने का खतरा बढ़ गया है। अगर यही स्थिति रही तो सुनामी और कोरोना जैसे हालात से आमना-सामना होता रहेगा। इस स्थिति से बचने के लिए भी हमें अपनी पारंपरिक प्राकृतिक जीवन शैली की ओर उन्मुख होना होगा, तभी मनुष्य जाति अक्षुण्ण जीवन लाभ ले सकती है।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि मनुष्य का सामाजिक जीवन नैतिकता के संबल के बिना प्रामाणिक जीवन नहीं बन पाता। नैतिकता, दर्शन को जाने बिना जीवन में नहीं उतर सकती। स्वस्थ सामाजिक जीवन के लिए दर्शन जनित नैतिकतापूर्ण आचरण करना अनिवार्य एवं लाज़िम है क्योंकि 'जैसी करनी वैसी भरनी' का सिद्धांत भी लोक में

बखूबी प्रचलित रहा है। अत: हमारी आदिम पुरातन परंपरा रसाल फल सा मिठास पाने के लिए आम के पेड़ लगाने की ही नैतिक शिक्षा देती है, बबूल का पेड़ लगाने की नहीं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. *'दिनकर' रामधारी सिंह - संस्कृति के चार अध्याय*
2. *राधाकृष्णन डॉ. सर्वपल्ली - भारतीय दर्शन*
3. *पाण्डे डॉ. रामखेलावन - मध्यकालीन संत साहित्य*
4. *सिंह भगवान - भारतीय संस्कृति*
5. *सिंह बच्चन - आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास*
6. *तुलसीदास गोस्वामी - रामचारित मानस*
7. *शास्त्री डॉ. मंगलदेव - भारतीय संस्कृति का विकास*
8. *सांकृत्यायन राहुल - वोल्गा से गंगा*
9. *नगेन्द्र डॉ. - भारतीय साहित्य*
10. *मिश्र डॉ. विद्यानिवास - भारतीय परंपरा*
11. *अरोरा नमित - भारतीय: एक सभ्यता का संक्षिप्त इतिहास*